Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 12

मजदूरी और प्रेम - सरदार पूर्ण सिंह

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक पूर्ण सिंह ने किन-किन व्यक्तियों को साधु कहा है?

(अ) शिक्षक व विद्यार्थी

(ब) किसान व भेड़पालक

(स) मजदूर व व्यापारी

(द) छात्रवे नेता

उत्तर: (ब)

प्रश्न 2. "उसे पीड़ा हुई तो इन सबकी आँखें शून्य आकाश की ओर देखने लगीं। " यहाँ लेखक ने उसे ' सर्वनाम का प्रयोग किसके लिए किया है –

(अ) किसान

(ब) गड़रिया

(स) बीमार भेड़

(द) गरीब महिला

उत्तर: (स)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "ऐसा काम प्रार्थना , सन्ध्या और नमाज से क्या कम है ?" लेखक ने किस काम की और संकेत किया है?

उत्तर- इस कथन से लेखक ने अनाथ और विधवा द्वारा की गई मजदूरी की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 2. लेखक जब अनार के फूल और फल देखता है, तो उसे किसकी याद आती है?

उत्तर- अनार के फूल और फल देखने पर लेखक को माली के रुधिर की याद आती है।

प्रश्न 3. लेखक ने किसान को किसके समान बताया है?

उत्तर- लेखक ने किसान को ब्रह्मा के समान बताया है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक की दृष्टि में मजदूरी का भुगतान किस रूप में किया जाना चाहिए?

उत्तर- लेखक की दृष्टि में जब कोई मजदूर हमारे लिए काम करता है और हम उसे मजदूरी के कुछ पैसे देकर समझ लेते हैं कि हमने उसकी मजदूरी का ऋण चुका दिया है , यह समझना हमारी भूल है क्योंकि मजदूरी के समय उसने अपने हाथ , पैर, सिर, आँखें इत्यादि शरीर के सभी अवयव हमें समर्पित कर दिये। इस प्रकार उसने पूर्ण समर्पण-भाव रखकर मजदूरी की। अत: उसकी मजदूरी का भुगतान तो धन के साथ ही अपनी प्रेमभरी कृतज्ञता के रूप में किया जाना चाहिए।

प्रश्न 2. लेखक ने किसे बेघर, बेनाम और बेपता कहा है और क्यों?

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

उत्तर- लेखक ने गड़रिये को बेघर , बेनाम और बेपता कहा है। गड़रिया भेड़ों को चराने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमता फिरता है। जहाँ कुछ दिन ठहरता है, वहाँ पर ही घास की झोंपड़ी बना लेता है। उसका कोई स्थायी घर नहीं है। लोग उसका पता नहीं जानते।

प्रश्न 3. लेखक को जिल्दसाज कब याद आता है और क्यों?

उत्तर- लेखक जब भी पुस्तक को हाथ में उठाता है तो उसको जिल्दसाज याद आ जाता है। पुस्तक उठाते ही उसको लगता है कि उसका हाथ जिल्दसाज के हाथ के ऊपर पड़ गया है। पुस्तक हाथ में आते ही लेखक लेखक के अंतः करण में भरतमिलाप का सा समां बंध जाता है। जिल्दसाज उसका आमरण मित्र बन गया है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. श्रम के महत्त्व पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए ।

उत्तर- जीवन में श्रम का महत्व सबसे ज्यादा होता हैं। मनुष्य को अपने जीवन में सफलता पाने के लिए श्रम करना अत्यंत जरुरी हैं। हम सभी लोग श्रम के बिना जीवन में सफल और सफलता की कल्पना नहीं कर सकते हैं। श्रम करने से ही हम जीवन की बड़ी-से-बड़ी आकांक्षा की पूर्ति कर पाते हैं। यह संसार कर्म-क्षेत्र माना गया है और कर्म करना ही मानव का सबसे महत्वपूर्ण अधिकार बताया गया है। किसान के लिए खेती करना, गड़रिये के लिए भेड़े चराना, शिक्षकों के लिए पढ़ाना और छात्रों के लिए पढ़ाई करना उनका कर्म भी है तो प्रथम कर्त्तव्य भी है। जब प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्म करने में प्रवृत्त होता है , तो उसे श्रम करना पड़ता है। यह श्रम मानसिक एवं शारीरिक हो सकता है , किसी को कार्य करने में मेहनत कुछ अधिक करनी पड़ती है , तो किसी को बौद्धिक श्रम अधिक करना पड़ता है। फिर भी श्रम सभी करते हैं। श्रम या परिश्रम से ही सौभाग्य फलित होता है। मजदूर श्रम करता है , तो उसे मजदूरी के साथ मालिक का प्रेम भाव भी मिलता है। किसान के श्रम का सभी आदर करते हैं। इसी प्रकार देश के सैनिकों के श्रम से सीमाएँ सुरक्षित रहती हैं तो छात्रों के श्रम से देश का भविष्य उज्ज्वल होता है। इस तरह श्रम की महिमा सर्वोपरि है तथा सर्वत्र श्रम की ही कविजय-पताका फहरती रहती है। अत: सभी को श्रमनिष्ठ एवं कर्मनिष्ठ होना चाहिए।

प्रश्न 2. "किसान का जीवन त्याग और मेहनत का जीवन है।" इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर किसान का जीवन त्याग और मेहनत का जीवन है यह कथन सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि किसान ही संपूर्ण मानव जाति और अनेकानेक के पशु पक्षियों का भरण पोषण करने वाला है किसान को अन्नदाता कहते हैं। किसान सेवा नवरंग दूसरों के लिए मेहनत करता है और श्याम अभाव में अपना जीवन व्यतीत करता है सर्दी गर्मी वर्षा अनेक कठिनाइयों को सहन करते हुए वह अपनी फसल को तैयार करता है उसके लिए उसका खेत ही उसकी हवन शाला होती है उसी में वह बीज रूपी हवन सामग्री डालता है और अन्न प्राप्त करता है किसान का जीवन कठिनाइयों से पूरित एक ऐसा सीधा-सादा जीवन है जो परिश्रम के बीच ही बीतता है। किसान ब्रह्मा के समान है ।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

उसका सम्पूर्ण जीवन पत्ते पत्ते , फूल-फूल और फल-फल में बिखरा रहता है। उसका जीवन इतना सादा है कि वह दूसरों को अन्न देता है और स्वयं साग-पात खाकर अपना जीवन निर्वाह कर लेता है। न उसे सर्दी-गर्मी की परवाह है और न उसे कष्टों की चिन्ता है। यदि उसके घर कोई अतिथि रूप में आता है तो वह उसको मृदु वचन , मीठे फल और अन्न से तृप्त करता है। दया , वीरता और प्रेम जैसा किसान जीवन में दिखाई पडता है वैसा अन्यत्र देखने को मिलना असम्भव इस प्रकार हम देखते हैं कि किसान का जीवन त्याग और परिश्रम का जीवन है।

भाषा-सम्बन्धी प्रश्न

प्रश्न 1. जंगल-जंगल , माता-पिता, पुष्योद्यान, हाथ-पाँव, आनन्दमग्न, मंद-मंद, आमरण, ब्रह्माहुति आदि सामासिक पद हैं। इनके समास-विग्रह कर समास का नाम भी लिखिए।

उत्तर-

पद	समास-विग्रह	समास-नाम
जंगल-जंगल -	प्रत्येक जंगल -	अव्ययीभाव समास
माता-पिता -	माता और पिता -	द्वन्द्व समास
हाथ-पाँव -	हाथ और पाँव-	द्वन्द्व समास
आनन्दमग्न-	आनन्द में मग्न-	तत्पुरुष समास
मन्द-मन्द-	अत्यंत मंद-	अव्ययीभाव समास
आमरण-	मरण तक-	अव्ययीभाव समास
ब्रह्माहुति-	ब्रह्मा के लिए आहुति-	तत्पुरुष समास

THE HINDI PAGE www.thehindipage.com

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 12

मजदूरी और प्रेम - सरदार पूर्ण सिंह

लेखक परिचय-

हिन्दी के मूर्धन्य निबन्धकार सरदार पूर्ण सिंह का जन्म सन् 1881 ई. में हुआ। हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू के मर्मज्ञ विद्वान सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों में हृदय के सच्चे उद्गार , आध्यात्मिकता व चमत्कारिकता की भरमार मिलती है। वे पेशे से शिक्षक होने के कारण अध्यापक पूर्ण सिंह के नाम से भी प्रसिद्ध थे।

सरदार पूर्ण सिंह ने हिन्दी में कुल छ: निबन्ध लिखे जो इस प्रकार हैं- सच्ची वीरता. 'आचरण की सभ्यता , 'मजदूरी और प्रेम , 'अमरीका का मस्ताना योगी वाल्ट विटमैन , 'कन्यादान और पवित्रता। अपने इन छ: निबन्धों से ही सरदार पूर्ण सिंह जी ने हिन्दी गद्य साहित्य के क्षेत्र में अपना गौरवपूर्ण स्थान बना लिया है।

सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों में उदाहरण , दृष्टान्त व उद्बोधन शक्ति अत्यन्त प्रभावशाली हैं। विचारों की मौलिकता, भावों की गहनता, शैली की सजीवता और भाषा की शक्तिमत्ता की दृष्टि से उनके भावात्मक निबन्ध अद्वितीय है। चित्रात्मकता और प्रवाह पूर्णता इनका विशिष्ट गुण है शब्द चयन में लाक्षणिकता का गुण विद्यमान है। इनकी मृत्यु सन् 1931 ई. मे हुई।

पाठ-सार

'मजदूरी और प्रेम' निबन्ध में परिश्रमी लोगों के श्रम और उसके सच्चे मूल्य की महत्ता प्रतिपादित की गई है। किसान का खेती करना , गडरिये का भेड़ चराना या किसी मजदूर द्वारा किए गए कार्य का मूल्य केवल पैसे से नहीं आंका जा सकता। बल्कि उनके प्रति प्रेम व सम्मान व्यक्त करके ही चुकाया जा सकता है। पाठ का सार निम्नलिखित शीर्षकों के माध्यम से वर्णित किया जा सकता है

1. हल चलाने वाले का जीवन-

लेखक ने हल चलाने वाले किसान के लिये कहा कि वह स्वभाव से तपस्वी और साधु है। वह पढ़ा-लिखा नहीं है। खेत उसकी हवनशाला है

खेती ही उसके ईश्वरीय प्रेम का केन्द्र है। व्यवस्था और प्रेम जैसा इन किसानों में देखा जाता है वैसा अन्यत्र नहीं मिलता है गुरु नानक ने ठीक ही कहा है 'भोले भाव मिले रघुराई ' यह किसान गोओं का मित्र , बैलों का हमजोली , पक्षियों का हमराज , महाराजाओं का अन्नदाता , बादशाहों को ताज पहनाने और सिंहासन पर बैठाने वाला , भूखों और नंगों को पालने वाला, समाज के पुष्पोद्यान का माली है।

2. गड़रिये का जीवन-

लेखक गडरिया के जीवन का वर्णन करते हुए कहता है कि गडरिया खुले आकाश के नीचे जीवन जीता है। बर्फानी प्रदेशों में वह विष्णु के समान क्षीरसागर में लेटा है। सूर्य और तारे ही उनके मित्र हैं। गडरिया का परिवार जंगल में यहां वहां कुटिया बनाकर रहता है। इनका जीवन बर्फ की पवित्रता से पूर्ण और वन की सुगंध से सुगंधित है उनका मुख, शरीर और अंतःकरण सुफेद इनकी बर्फ , पर्वत और भेड़ें सुफेद। अपनी सुफेद भेड़ों में गडरिया का परिवार शुद्ध सुफेद ईश्वर के दर्शन करता है।

3. मजदूर की मजदूरी-

लेखक मजदूर की मजदूरी के बारे में कहता है कि मजदूर सारा दिन कठिन परिश्रम करता है और शाम को उसे केवल मजदूरी के पैसे दे दिए जाते हैं। लेकिन इससे उसकी मजदूरी नहीं चूकती है बल्कि मजदूरी का ऋण तो परस्पर की प्रेम सेवा से चुकता होता है। अन्न धन देने से नही। जो कमीज एक अनाथ विधवा द्वारा सारी रात बैठ

THE HINDI PAGE जानें कुछ नया www.thehindipage.com

कर चली गई है वह केवल शरीर का वस्त्र नहीं बल्कि आत्मा का वस्त्र होती है इसलिए उसकी मजदूरी कुछ पैसों में नहीं चुकाई जा सकती। लेखक कहता है कि मेहनत करके कोई वस्तु प्राप्त करने में जो आनंद आता है वह किसी मशीन के द्वारा नहीं आ सकता मनुष्य के हाथ से बने हुए कामों में निश्चय ही उसकी प्रेममय पवित्र आत्मा निवास करती है। हाथ से किए हुए काम में जीवन रहता है।

4. मजदूरी और कला–

मशीनी सभ्यता की आलोचना करते हुए लेखक कहते हैं कि आजकल मशीनें बहुत महंगी हो गई है और मनुष्य बड़े सस्ते हो गए हैं लेकिन सच्चा आनंद तो अपना अपने काम से ही मिलता है यदि हमें अपना काम मिल जाए तो फिर वह स्वर्ग प्राप्ति के बराबर है लेखक ने मनुष्य की पूजा ही ईश्वर की पूजा बताई है और कहा है कि हमें ईश्वर के दर्शन अपनी आत्मा में ही करनी चाहिए यही हमारा धर्म है यदि मजदूर को उसकी मजदूरी ना मिले तो फिर किसी तरह की कला कौशल पर विचार करना लेखक के अनुसार उचित नहीं है लेखनी मजदूर को ही सर्वोच्च बताया है मजदूर के बिना कोई भी धर्म और कला कौशल उन्नति नहीं कर सकते हैं।

5. मजदूरी और फकीरी-

लेखक बताता है कि मजदूरी और फकीरी मनुष्य के विकास के लिए जरूरी हैं। बिना मजदूरी के फकीरी नहीं आ सकती। बड़े-बड़े पादरी मौलवी पंडित साधु सन्यासी जब तक हल कुदाल और खुरपा लेकर

मजदूरी नहीं करेंगे तब तक उनका आलस्य नहीं जाएगा मजदूर के अनाथ नयन, अनाथ आत्मा और अनाश्रित जीवन की बोली सीखने की आवश्यकता है और जब हम यह सीख जाएंगे तो हमें लगेगा कि हमारा यही साधारण जीवन ईश्वर का भजन हो गया है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg